SEMESTER – IV

(Development of Indian Theater)

EC – 02

CONTEMPORARY INDIA

(2019 - 2021)

E-Content 02

- Unit – II : Topic
  - A. **औपनिवेशिक एवं आधुनिक रंगमंच**

Vetted by :

प्रो0 (डॉ0) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9835463960

डॉ0 विद्यानंद विधाता

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9472084115

औपनिवेशिक एवं आधुनिक रंगमंच

हिंदी रंगमंच – हिंदी के नाट्य और रंगमंच की परंपरा पर्याप्त समृद्ध रही है। हिंदी रंगमंच के क्षेत्र में भी आधुनिक रंगचेतना एवं नई संवेदनशीलता से युक्त निष्ठावान, उत्साही तथा कल्पनाशील रंगकर्मियों की एक पूरी पीढ़ी अत्यंत सक्रिय थी।

भारतेंदु से पूर्व यूरोपीय नाट्य प्रयोग की छाया में पारसी थियेटर कंपनियां हिंदुस्तानी नाटकों का प्रदर्शन आरंभ कर चुकी थीं। उनका रूपविधान मोहक, दृश्यविधान आकर्षक और विस्मयकारक होता था जिससे सस्ता मनोरंजन तो होता था, परंतु सुरूचि और कलात्मक परिष्कार नहीं। भारतेंदु द्वारा प्रवर्तित व्यावसायिक हिंदी अवतरण इन्हीं परिस्थितियों में हुआ। हिंदी रंगमंच के पुनरूद्धार द्वारा वे पारसी थियेटरों की भद्दी कुरूचिपूर्ण परंपरा के स्थान पर सुरूचिपूर्ण, कलात्मक और भव्य रंगमंच की स्थापना चाहते थे जो भारतीय जनजीवन की आकांक्षओं और भावनाओं का सच्चा प्रतीक हो सके। भारतेंदु ने अपने नाटकों द्वारा देश का गौरव बढ़ाया और मातृभाषा का उत्थान भी किया। हालॉकि भारतेन्दु के पूर्व से ही मध्यकाल को छूती हिंदी रंगमंच की एक सुदीर्घ परंपरा किसी–न–किसी रूप में सदियों पहले से चली आ रही थी जिसे भारतेंदु ने उसे नया रूप और रंग दिया।

परतंत्रता के कारण भारत दुर्दशा और प्रेमजोगी में सामाजिक उत्थान और राष्ट्रीय नवजागण का संदेश मुखर हुआ। भारतंदु के समकालीन देवकीनन्दन चौधरी ने सीताहरण, शिवनन्दन सहाय ने कुष्ण सुदामा, राधाचरण गोस्वामी ने अमरसिंह राठौर और लाला श्रीनिवास दास ने

रणधीर प्रेममोहिनी की रचना की। लगभग दो दशकों तक 1900 ई0 से 1925 ई0 तक हिंदू रंगमंच के महान अग्रदूतों में आगा हश्र कश्मीरी, राधेश्याम पाठक, नारायणप्रसाद बेताब, तुलसीदत्त शैदा और हरिकृष्ण जौहर प्रमुख थे। राधेश्याम के वीर अभिमन्यु, हश्र के सूरदास और सीता वनवास आदि नाटकों को पारसी थियेटर कंपनियों ने अपना लिया। द्विवेद्वी युग नाट्य रचना और रंगमंच की दृष्टि से अंधकार एवं निराशा का युग था।

हिन्दी नाट्य एवं रंगमंच की इसी पृष्ठभूमि में जयशंकर प्रसाद का एक महान सांस्कृतिक अग्रदूत के रूप में अवतरण हुआ। उन्होंने मुख्यतः ऐतिहासिक नाटकों की रचना की जिसमें प्राचीन भारतीय गौरव, देशभक्ति और प्रेम का बड़ा ही उदात्त और मधुरा चित्रण हुआ है। ध्रुवस्वामिनी, चन्द्रगुप्त, स्कन्धगुप्त जैसे नाटकों का अत्यधिक मंचन हुआ। भारत की प्राचीन कथाभूमि पर ही राजकुमार वर्मा ने चारूमित्रा, जगदीश चन्द्र माथुर के कोणार्क, श्री रामवृक्ष बेनीपुरी ने अम्बपाली और नेत्रदान, पृथवीनाथ शर्मा ने उर्मिला और सीताराम चतुर्वेदी ने सेनापति पुष्यमित्र नामक नाटकों की रचना कर प्रसाद की परंपरा का पुनरूत्थन किया। नाट्यरचना की यह लहर हिंदी में तेजी से बढ़ रही थी। इन नाटाकें में नाटकीयता, जीवन की मधुरता और भावों की प्राणवत्ता का बड़ा ही मर्मस्पर्शी प्रस्फुटन हुआ है। यशपाल, विष्णुप्रभाकर, लक्ष्मीनारायण मिश्र, लक्ष्मीनारायण लाल, मोहन राकेश एवं धर्मवीर भारती हिंदी की नवीन नाट्यधारा के प्रवर्त्तकों में है।

भारतीय रंगमंच बहुरंगी है। भारत में सदियों से प्रवाहमान संस्कृति की आंतरिक धारा हमारे रंगमंच को भी प्राणरस से पुष्ट कर रही है।

उन्नीसवीं सदी के उदयकाल तक भारतीय जीवन, दर्शन और कला पर पाश्चात्य सभ्यता की किरणें अपना रंग और प्रकाश बिखेरने लगी थीं। नाट्य–लेखन के स्तर पर बादल सरकार, विजय तेंदुलकर, आद्य रंगाचार्य गिरीश कर्नाड, मोहन राकेश, धर्मवीर भारतीय इत्यादि के कृतित्व ने प्रादेशिकता की सीमाएं तोड़कर राष्ट्रीय स्तर की लोकप्रियता प्राप्त की। आषाढ़ का एक दिन, अंधायुग, तुगलक, लुक बैक इन ऐंगर, कंजूस इत्यादि अनेक मौलिक एवं अनूदित श्रेष्ठ नाटकों की भव्य एवं प्रभावशाली प्रस्तुतियों ने प्रदर्शनीयता एवं उत्कृष्टता के नए आयाम उद्घाटित किए।

दिल्ली में ओम शिवपुरी, मोहन महर्षि, बं. व., कारेत, बृजमोहन शाह, रामगोपाल बजाज और विश्व मोहन बडोला इत्यादि की नाट्य–संस्था दिशांतर द्वारा प्रस्तुत आधे–अधूरे एवं इन्द्रजीत, खामोश अदालत जारी है, तथा त्रिशंकु, जैसे प्रदर्शन आज भी स्मरणीय हैं। राजिंदर नाथ, टी.पी. जैन और शाम अरोड़ा इत्यादि के रचनात्मक सहयोग के स्थापित नाट्य–संस्था अभियान के पगला घोड़ा, गिली पिग, घासीराम कोतवाल, पंछी ऐसे आते हैं, जात ही पूछो साधू की तथा ताम्रपत्र, जैसी प्रस्तुतिकयों का भी अत्यंत ऐतिहासिक महत्त्व है। हबीब तनवीर के छत्तीसगढ़ी कलाकारों के रंगमंडल नया थियेटर के आगरा बाजार, चरणदास चोर, मिट्टी की गाड़ी और देख रहे हैं नैन जैसे प्रदर्शनों ने न केवल एक नई रंग–शैली को जन्म दिया, बल्कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रतिष्ठा प्राप्त की। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय और श्रीराम सेंटर के व्यावसायिक रंगमंडलों के अतिरिक्त दिल्ली में उल्लेखनीय रंगकर्म करने वाली बहुसंख्य नाट्य–संस्थाओं में से प्रयोग (एम.के.रैना), अमाल अल्लाना, दीनानाथ अग्रदूत, रूचिका अल्काजी

फैजल एवं अरूण कुकरेजा, नॉन ग्रुप (रवि बासवानी एवं रमेश मनचंदा), संभव (देवेन्द्र राज), अंकुर, साक्षी (कृष्णकांत) और एक्टवन (एन.के. शर्मा), अस्मिता (अरविंद गौड़) का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। इसके अतिरिक्त अनुराधा कपूर, अनामिका हक्सर तथा त्रिपुरारी शर्मा ने अपनी अलग पहचान बनाई है। भनु भारती (उदयपुर), बंसी कौल (भोपाल), सतीश आनन्द (पटना), उर्मिल कुार थपलियाल (लखनऊ), सत्यव्रत सिन्हा (इलाहाबाद), सत्यमूर्ति (कानपुर), गिरीश रस्तोगी (गोरखपुर), वीरेन्द्र मेंहदीरत्ता (चण्डीगढ़) दिनेश ठाकुर और नादिरा जहीर बब्बर (बम्बई), बलवंत ठाकुर (जम्मू) के अरिरिक्त नए हिन्दी रंगान्दोलन के आरम्भ से अब तक निरन्तर सक्रिय रहकर राष्ट्रीय स्तर पर स्वयं को प्रतिपादित करने वाले वरिष्ठ निर्देशकों में सत्यदेव दुबे (थियेटर यूनिट, बम्बई), एम. एस. सथ्यू (इप्टा बम्बई) तथा श्यामानंद जालान (अनामिका और पदातिक, कलकत्ता) और संस्था के रूप में म. प्र. रंगमंडल और उसके भूतपूर्व निर्देशक ब. व करात (भोपाल) का महत्त्वपूर्ण योगदान है। मोहन राकेश, शंकर शेष, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, जगदीश्वरचन्द्र माथुर, लक्ष्मीनारायण लाल, शरद जोशी और रमेश बख्शी आदि लेखकों ने हिन्दी के मौलिक नाट्य–लेखन में काफी बड़ा योगदान दिया। परंतु इस क्षेत्र में सतत सक्रिय भीष्म साहनी, सुरेन्द्र वर्मा, असगर वजाहत, मृणाल पाण्डे, गिरिराज किशोर, नंद किशोर आचार्य, कुसुम कुमार, दूधनाथ सिंह, रामेश्वर प्रेम प्रभाकर श्रोत्रिय, दया प्रकाश सिन्हा, ललित धपलियालनाग बोडस, अविनाश चन्द्र मिश्र और स्वदेश दीपक जैसे पुरानी–नई पीढ़ी के अनेक रचनाकार मौलिक हिंदी नाट्य–लेखन को समृद्ध कर रहे हैं। देशी–विदेशी भाषाओं से अनुवादित या रूपांतरित नाटकों का आधिपत्य हिंदी रंगमंच पर आरंभ से ही बना रहा है।

उपन्यासों और कहानियों के ही नहीं, बल्कि लंबी कविताओं तक के अभिमंचनों ने भी उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। इसी बीच बाल रंगमंच, नुक्कड़ नाटक और कहानियों के रंगमंच के क्षेत्र में भी नई सक्रियता दिखाई दे रही हैं, जो निश्चय ही उत्साहवर्द्धक हैं।

संदर्भ– सूची

1. ब्रजराज किशोर, हिन्दी नाटक और रंगमंच, समकालीन परिदृश्य, 1988, जनप्रिय प्रकाशन, दिल्ली
2. बलबंत गार्गी, रंगमंच, राजकमलप्रकशन, 1968